स्नातकोत्तर मैथिली विभाग
पटना विश्वविद्यालय

द्वितीय सत्रार्द्ध
पत्र - सी० सी०-७

①

एकावली परिणय

प्रो० सत्यनारायण मेहता

शाश्वत सत्य अछि जे महाकाव्य रचनाकार कोनो भाषाक अथवा क्षेत्र विशेषक नहि रहि ओ सम्पूर्ण संसारक महाकवि भए जाइत अछि। महाकविकें कोनो सीमामे बान्हि कए नहि राखल जा सकैत अछि। कविशेखर बदरीनाथ झाकें संस्कृत रचना के छोड़ि 'एकावली परिणय' महाकाव्यक महत्वक आधार पर हमरा लोकनि कोनो सीमामे बान्हि कए नहि राखि सकैत छी। एहि महाकाव्यक रचना कए इहो अपनाकें मानवतावादी कविक रूपमे सिद्ध कए लेने छथि। मैथिली भाषा साहित्यक तं कथे कोन अन्य भाषाहुक साहित्यमे ई पूजनीय थिकाह।

'एकावली परिणय' महाकाव्यक रचयिता कविशेखर बदरीनाथ झाक जन्म मधुबनी जिलान्तर्गत सरिसबपाही गाम मे 1893 ई० मे भेल ओ मृत्यु भेल काशीमे 1974 ई०मे। ई साहित्यक मेधावी छात्र छलाह। ई 1913 ई०मे व्याकरण तीर्थ, 1914 मे काव्यतीर्थ ओ 1915 मे चौत परीक्षामे उत्तीर्ण भेलाह। बहुत दिन धरि मुजफ्फरपुर धर्मसमाज संस्कृत कालेज मे साहित्यक अध्यापकक पदकें सुशोभित कएने रहलाह। संस्कृत साहित्यमे अनेक रचना कएलनि ओहि रचना सभ मे सं 'राधा परिणय'क आधार पर विशेष प्रसिद्धि प्राप्त भेलनि। मैथिली साहित्य जगतमे 'एकावली परिणय' महाकाव्यक कारणें बहुत प्रसिद्धि प्राप्त भेलनि। एहि महाकाव्यक प्रकाशनक संदर्भमे प्रो० भीमनाथ झा लिखैत छथि —

एकर सर्वप्रथम धारावाही प्रकाशन प्रो० रमानाथ झा द्वारा सम्पादित 'साहित्य पत्र' मे भेल छल तथा पुस्तकाकार प्रकाशन 1952 ई०मे राज प्रेस दरभंगा सं भेल। एहिमे संस्कृत काव्यशास्त्रक अनुसार महाकाव्यक प्रायः सभ विशेषता एकके ठाम भेटि जाइछ।"

रीतिकालीन एवं पाश्चात्य आचार्य लोकनि द्वारा प्रस्तुत महाकाव्यक लक्षणक सम्मिलित रूप आलोच्य महाकाव्यमे देखबामे आओत। कविशेखर एहि महाकाव्यक रचना लक्षण ग्रन्थानुसारें कए

मैथिली साहित्यक एक अमूल्य निधि प्रदान कएलनि अछि जे संस्कृत काव्यसँ पूर्ण प्रभावित अछि तकर कारण स्पष्टे अछि। कविशेखर अपन समस्त जीवन संस्कृत साहित्यक अध्ययन आ अध्यापनमे व्यतीत कएलनि अछि तखन ओ प्रभावित प्रभावित होइतथि अन्य साहित्यसँ ! ओ तेँ महाकाव्यक प्रारम्भमे स्वयं स्वीकार कएलनि अछि—

जेँ जाइन्हि भावक साम्य सूझि,
संस्कृत काव्यक प्रतिबिम्ब बूझि।
तेँ करथु सुधीजन समाधान,
भाषा सौन्दर्यक गति ने आन।

दुर्जन आ समालोचक लोकनिक हेतु तँ ओ लिखि चुकल छथि-निम्न पाँति उद्धरण—

परदोष निरखबामे अबाध्य,
दुर्जन परितोषब ककर साध्य।
अथवा हुनकहु होएत तोष,
जेँ रहेत पुनि दुर्वार दोष।

महाकवि विद्यापति सेहो अपन अवहट्ट रचना 'कीर्तिलता' मे दुर्जनक प्रति कहलनि अछि—

सुअण पसंसइ कव्व मम्मु
दुज्जन बोलइ मन्द
अवसओ विसहर विस वमइ
अमिअ विमुक्कइ चन्द।

अर्थात् सज्जन व्यक्ति हमर काव्यक प्रशंसा अवश्य करताह, दुर्जन एकरा निम्नकोटिक कहबे करताह। सर्प अवश्य विष-वमन करत आ चन्द्र अमृत वर्षा।

महाकाव्योचित लक्षणक आधार पर कविशेखर एहि महाकाव्यक प्रारम्भ मङ्गलाचरण, वस्तु निर्देश आदिसँ प्रारम्भ कएलनि अछि। ई महाकाव्य देवी भागवत्‌क छठम स्कन्धक प्रसिद्ध कथानक पर आधारित अछि। ई छठम स्कन्ध २० सँ २३ अध्याय मे वर्णित अछि। एहि अध्यायमे वर्णित कथाक आधार पर प्रस्तुत महाकाव्य १५ सर्गमे निबद्ध अछि।

एहि महाकाव्यक नायक थिकाह क्षत्रिय हैहय कुलदीप तुर्वसु राजाक पुत्र 'एकवीर'। नायिका थिकीह रैभ्य राजाक कन्या 'एकावली'। महाकाव्यकार अपन पाण्डित्यक परिचय देलनि अछि कलाकारितामे जे निहित अछि— एकवीरक जन्म, शैशव, ब्रह्मचर्य, यौवन तथा शिक्षा-दीक्षाक

Scanned with CamScanner

आदिक उत्तम वर्णनमे- जन्मोत्सव, नामकरण, चूड़ाकरण, उपनयनक सांगोपांग वर्णनमे।

'एकावली परिणय' महाकाव्यक कथानक संक्षिप्त अछि। एकटा तुर्वसु नामक राजा छलाह, हुनका सन्तान नहि छलनि। ओ सन्तानक हेतु तपस्या कएलनि तखन 'एकवीर' नामक पुत्र भेलनि। दोसर दिस रैभ्य राजाकें रुक्म रेखा नामक पटरानी छलथिन, जिनका सन्तान नहि छलनि। पुत्रेष्टि यज्ञ कएलाक उपरान्त ओहिसँ 'एकावली'क उत्पत्ति होइछ आ ओही दिन राजाक अमात्यकें सेहो 'यशोमति' नामक कन्याक जन्म भेलनि। 'एकावली' आ 'यशोमति' कें नेनहिसँ पूर्ण मैत्री भए गेलनि। एकावली एक दिन अपन सखी लोकनिक संग गंगामे जलक्रीड़ा करबाक निमित्त गेलीह। संयोगवश पातालपुरीक राजा 'कालकेतु' हुनक सौंदर्य देखि अत्यन्त लालायित भए गेल आ हुनका बलपूर्वक हरण कए अपन राजधानी लए गेलाह। एकावलीक प्रिय सखी 'यशोमति' अत्यन्त दुखी भए जाइत छथि। एतबे मे हुनका 'एकवीर' सँ साक्षात्कार होइत छनि। यशोमति अपहरणक घटना एकवीरकें सुनबैत छथि, तखन एकवीर यशोमति आ सेनाक संग मन्त्रसिद्ध कए पातालपुरी प्रवेश करैत छथि। पातालपुरीमे कालकेतु राक्षसक संग युद्ध कए ओकरा संहार कए एकावलीकें मुक्त करबैत छथि। एकावलीक संग सभ केओ रैभ्य राजाक ओतए अबैत छथि तथा ओतहि एकावली एवं एकवीरक विवाह होइत अछि। प्रस्तुत महाकाव्यक इएह संक्षिप्त कथानक अछि।

जखन हमरा लोकनि सम्पूर्ण महाकाव्यक अवलोकन करैत छी तँ ई स्पष्ट भए जाइत अछि जे कविशेखरजी रीतिकालीन महाकाव्यक शैली पर प्रस्तुत महाकाव्यक कथावस्तुकें पौराणिक तथ्यक संग उपस्थित कएलनि अछि। कथानकक आधार पर महाकाव्यक नामकरण 'एकावली' उपयुक्त अछि।

वर्णनक चमत्कार ओ भाव-गाम्भीर्यक दृष्टिएँ ई कृति अद्वितीय अछि। एहिमे महाकाव्यक लक्षणक अनुरूप सूर्य, चन्द्रमा, संध्या, राति, भिनसर, अन्हार छओ ऋतु, तपोवन, नदी, नीति, स्त्री, ब्रह्मचारी, गृहस्थ आदिक

यथा स्थान वर्णन भेल अछि। एकर अतिरिक्त नायक-नायिकाक विप्रलंभ, तकर बाद संयोग श्रृंगारक शिष्ट-विशिष्ट वर्णन भेल अछि।

एहि महाकाव्यमे मिथिलाक जन-जीवनमे प्रचलित रीति-नीतिक विशेष रूपसँ वर्णन भेल अछि, 'विवाह, उपनयन, बच्चाक जन्म', अन्नप्राशन संस्कार, नामकरण आदि विविध प्रकारक प्रचलित परम्पराक वर्णन अछि।

यथा —

टोना आदि:—

दुस्सह - टोटि दोष हरबालए माता देव मनाए।
राइ जमाइनि देल बच्चाकें हैंसा सुर्ब पहिराए॥

अन्नप्राशन :—

छठमा - मासहिं फेरि इस्कारल, सब बान्धवाकें मूल।
अन्नप्राशन शिशुक करक छल सम्पतिक अनुरूप॥

चूड़ाकरण :—

तेसर वर्ष वयस तनयक लखि, सुसमय भूप विचारि।
चूड़ाकरण कर्णविधोत्सव धरमे देल पसारि॥

मुण्डन :—

नौआ पबि बसन अन मुण्डन, कएलक मण्डित वेश।
आँचर बीच पुर्नेनिपात भए, परिछल माता केश॥

उपनयन :—

छल मङ्गल मङ्गल दिन भूपति-सुतक माटि माङ्गल्य।
राजभवनमे सभजन- मनमे ते छल मुद पाञ्चल्य॥
बाँटि तेल सिन्दूर बसन, चढ़ि शिविका पोखरि जाए।
रानी सुतक कराओल कुश रस, परम प्रमोद मनाए॥

उपर्युक्त पाँति सभक अवलोकनसँ स्पष्ट भए जाइत अछि जे जादू-टोनासँ बचबाक लेल नेनाक गरदनिमे जड़ी-बूटी बान्हल जाइत अछि, बच्चाक मुण्डनमे परिछब, उपनयनमे माटि खाङुर, परइकट्टी, तेल-सिन्दूर बाटब आदि। पुन: विवाहमे सिउंथि नोतब, अरिपन, कि-बक बरक-नाक पकड़ब, नयना योगिन, चुमाओन, डहकन आदिक विधान अछि। वस्तुत: मिथिलाक विधि व्यवहार हेतु एकावली परिणय एकटा कोश सदृश अछि।

आचार्य विश्वनाथ काव्यक प्रसंग लिखि-चुकल छथि जे "वाक्यं रसात्मकम काव्यम्" अर्थात रसात्मक वाक्य काव्य थिक। यद्यपि भिन्न-भिन्न विद्वान विभिन्न प्रकारक काव्यक परिभाषा प्रस्तुत कएलनि अछि, परंच सभक निष्कर्ष इएह बहराइछ जे जकर शब्द विन्यास सर्वोत्तम रहए जाहिमे माधुर्य, रोचकता एवं रस प्रवाह रहए, मधुर-भावपूर्ण कल्पना रहए, अर्थपूर्ण संगीत रहए वएह यथार्थ कविता वा काव्य थिक।

कविशेखर एहि महाकाव्यमे छन्दक विलक्षणता, भाषाक चमत्कार, भावक सरसता तथा कल्पनाक सौंदर्य सर्वथा श्लाघनीय तथा उत्कृष्ट थिक। यदि हिनक तुलना संस्कृत साहित्याचार्य 'माघ' सँ कएल जाए तँ सेहो अत्युक्ति नहि। यद्यपि ओ एहिमे मौलिकताक अलौकिकताक प्रदर्शन नहि कएलनि अछि, मुदा कहए पड़त जे रीतिकालीन शैली पर एहि रूपक महाकाव्य मैथिली साहित्यमे आद्यपर्यन्त उपलब्ध नहि छल। ई महाकाव्य पन्द्रह सर्गमे विभाजित अछि, जाहिमे छन्दक प्रयोग कए अपन रचयिता फराक-फराक नव-नव छन्दक प्रयोग कए अपन छन्दोज्ञानक पूर्ण परिचय देलनि अछि। एतबे नहि हिनक छन्दोज्ञानक पूर्ण परिचय देखबाक योग्य अछि। सोरठा, विलक्षणता निम्न पद देखबाक योग्य अछि। सोरठा छन्दमे प्रथम एवं तृतीय चरणक अन्तमे तुक मिलान साधारणतया कवि लोकनि करैत अएलाह अछि, किन्तु कविशेखरजी ताहिमे एक नूतनता प्रस्तुत कएलनि अछि। प्रथम ओ तृतीय चरणके तुक मिलबैत दोसर-चारिम चरणक तुक सेहो मिलौलनि अछि।

यथा — सारथि जीव अमन्द
अतुल-कलेवर रथ सहित
चलि कुचालि स्वच्छन्द
इन्द्रिय-हय खसबय त्वरित

छन्दमे वर्णित शब्द-चयन कोन चमत्कारसँ ई कएलनि अछि जे सर्वथा वर्णनीय। अर्थ गौरवक संग लालित्यक पुट दैत, कल्पनामे उड़ैत हिनका द्वारा रचित निम्न पाँति देखल जाए —

ओ उदित भाग्य शिशु-पूर्णचन्द
कमला-प्राची-दुख तम अमन्द
हरि हरि-चकोर-दृग दए प्रमोद
रचलनि अवनी-रचनी विनोद

उपर्युक्त पाँति मे अनुप्रासक छटा, अर्थ गाम्भीर्य, अलंकारक प्रयोग एवं स्वच्छ भावनाक संग-संग छन्दक अबाध गति सर्वथा दर्शनीय अछि।

Scanned with CamScanner

कविशेखर जी प्रस्तुत महाकाव्यमे ग्रामीण शब्दक प्रयोग बहुत कम कएने छथि। यदि कतहु-कतहु सहज शब्दक प्रयोग कएने छथि तँ अभूतपूर्व वर्णनक कौशलताक परिचय देने छथि- निम्न पाँतिमे शृंगारक वर्णन द्रष्टव्य-

वरुण-दिशा-मुखमे कमल
रजनी निकट विचारि
नवल राग सिन्दूर जनि
सन्ध्या-सखी सम्हारि

एहि पाँतिमे प्रतीचीकेँ नायिका बना एवं संध्याकेँ ओकर सखी मानि सूर्यक लालिमासँ सिन्दूरक उपमा देत निराकारकेँ साकार बनबैत भावक अभिव्यक्ति प्रशंसनीय अछि।

प्रस्तुत महाकाव्यमे कविक कल्पनाक कमनीयता अद्भुते टा नहि, मैथिली साहित्य जगतमे बेजोड़ कहल जा सकैछ। राजा तुर्वसुक स्त्री 'एकवीर' मेनाकेँ गोदमे लए जखन नामकरण करबा रहल छथि तखन वर्णनमे कल्पना अद्भुत अछि-

ओ मेनाक मुखमंडलक वर्णनमे कल्पना अद्भुत अछि-

नृप नितम्बिनी-लोहित कमलिनी मृदुल अंकमे
कज्जल बिन्दु मिलिन्द-विजृम्भित बाल कमल-मुख भास

एतए लोहित कमलिनीसँ रानीकेँ, कज्जल बिन्दुसँ भ्रमरकेँ बाल-मुखकेँ कमलसँ तुलना अत्यन्त रोचक अछि।

निष्कर्ष रूपमे कहल जा सकैत अछि जे प्रस्तुत महाकाव्य संस्कृत लक्षण ग्रन्थक आधार पर लिखल गेल अछि आ महाकाव्यक लक्षणसँ युक्त अछि। एहि महाकाव्यक विशेषता कथाक चमत्कारमे नहि वरन कविक वर्णनक कौशलतामे अछि। एहिमे प्रचुर मात्रामे अलंकारक प्रयोगक कारणेँ प्रसाद गुणक अभाव अछि। भाषाक दृष्टिकोणसँ तत्सम शब्दक अधिकता अछि तेँ ई महाकाव्य जन-सामान्यक हेतु बोधगम्य नहि भए सकल, तथापि कविशेखर बदरीनाथ झा द्वारा रचित 'एकावली परिणय' महाकाव्य मैथिली साहित्यक अनुपम निधि थिक।

1. एकावली महाकाव्यक समीक्षा करू।
2. एकावली महाकाव्यक नामक सार्थकता प्रमाणित करू।

Scanned with CamScanner